INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

खलजी कालीन शासन : दोआब में सैनिक प्रतिरोध एवं क्षेत्रीय सत्ता की पुर्नस्थापना के लिए संघर्ष

(Khalji Rule: Military Resistance in the Doab and the Struggle for Reestablishment of Regional Authority)

डॉ. मानवेंद्र प्रताप सिंह
शिक्षक
एच. बी. इंटर कॉलेज, अलिगड

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2023-98862836/IRJHIS2310003

प्रस्तावना :

कुछ इतिहासकारो ने इस तथ्य को स्थापित करने में, कि तुर्की राज्य के भारत में स्थापना के साथ ही संपूर्ण भारत इस्लाम की सत्ता के अधीन हो गया था, में अपनी पूरी शक्ति लगा दी जबकी तथ्यों का अन्वेषण करने पर यह तथ्य स्थापित होते है कि तुर्की शासन दिल्ली के आसपास भी शान्त रूप में संचालित नही था। दोआब एवं दिल्ली के 100 कि0मी0 के दायरे को भी शांत रखने को नियमित सैन्य अभियान चलाने पड़ते थे। दोआब के क्षेत्र में लगातार उठ रहे संघर्ष की चिंगारी को शान्त करने के प्रयास तो सुल्तानो ने किये परन्तु दोआब में सैनिक प्रतिरोध एवं क्षेत्रीय सत्ता की पुर्नस्थापना का संघर्ष जारी रहा।

गुलाम वंश की समाप्ति के पश्चात् जलालुद्दीन फिरोज खिलजी दिल्ली का सुल्तान बना। जलालुद्दीन ने अपनी उदारता एवं बलबनी राज्य के मलिकों को सम्मान देकर अपने लिए संपूर्ण राज्य के मुस्लिम वर्ग एवं दरबारियों से सहानुभूति प्राप्त करने का सफल प्रयास किया। इतिहास के तथ्यों को निष्पक्ष रूप से नीर–क्षीर करने पर ज्ञात होता है कि जलालुद्दीन फिरोज अपनी उदार एवं दानशीलता की छवि बनाकर अपने को स्थापित कर अपनी आगे की पीढियो को राजगद्दी विरासत में देना चाहता था। वह जानता था कि इस्लाम के अनुयायी अथवा उससे पूर्व के शासक अपने धर्म की कट्टरता के कारण रक्त से सिंहासन को स्नान कराने के बाद ही उस पर आसीन होते आये थे। इसलिए वह अपनी मृत्यु से पुर्व ही राजगद्दी को अपने पुत्र को बिना किसी रक्तपात अथवा विद्रोह के सौंपना चाहता था। सामान्य एवं स्पष्टतः कोई व्यक्ति जिसने 60 वर्ष से अधिक दिल्ली सल्तनत के अधीन रहकर इस्लाम के नाम पर रक्त की नदियाँ बहायी हो, वो जो कैकुबाद एवं शिशु क्यूमर्स के रक्त से अपनी गद्दी को धोकर और तलवार में रक्त लगा कर सिंहासन पर बैठा हो, अचानक उदारता, दया और दानशीलता की बात करने लगे, केवल भ्रमित एवं आश्चर्यचकित करने वाला है, दूसरी ओर खिलजी वंश के सबसे प्रसिद्व एवं वास्तविक शासक अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा एवं ससुर तथा पूर्व

सुल्तान जलालुद्दीन के विपरीत अत्यधिक क्रूर एवं कठोर साबित हुआ। उसने आंतक, अपहरण, भय एवं दण्डकी नीति का अनुसरण किया। उसने इस्लाम की कट्टरता का पाठ अपने काजीमुगुसुद्दीन (बयाना) से सीखा तथा भय एवं आंतक का शासन लागू किया। खिलजी साम्राज्य से पूर्व दोआब (हिन्दुस्तान) अर्थात् गंगा–यमुना के मध्य का भाग तथा इनके सीमावर्ती क्षेत्रके लोगों ने कभी भी दिल्ली सल्तनत की अधीनता को पूर्ण रूपेण स्वीकार नहीं किया। जब कभी दिल्ली के सुल्तान विजय यात्रापर निकले उस समय क्षेत्रीय राजाओं ने उनसे युद्ध किया, पराजय आसानी से स्वीकार नहीं की। पराजित होने पर सुल्तान को राजस्वदेना स्वीकार भी किया परन्तु अपनी शक्ति को अर्जित एवं एकत्रित कर पुनः दिल्ली सल्तनत को चुनौती दी। ''यद्यपि बलबन ने दोआबको दृढ़ीकृत कर अपने को जमाने की भरपूर कोशिश की तब भी जलालुद्दीन ने इसे राजद्रोह के गर्म बिस्तर के रूप में पाया और इसे जीतने के लिए पवित्र विजय यात्राओं का सहारा लिया''[1]

सुल्तान फिर भी वह इन क्षेत्रोंपर पूर्ण नियन्त्रण नहीं कर सका। दिल्ली में सत्ता परिवर्तन होते ही क्षेत्रीय राजा संसाधनों का अभाव होते हुए भी गुलामी के जुए को उतार फेंकने के लिए तप्पर हो उठते थे यद्यपि उनके पास कोई सेना या संगठन नहीं होता था, उनके साथ किसान, मजदूर वर्ग एकत्रित हो कर संघर्ष में साथ देते थे, अपने क्षेत्रों, राष्ट्र की रक्षा के प्रश्न पर दिल्ली के मुस्लिम शासकों को खुली चुनौती देते और अपनी जान की परवाह न करते हुए उपलब्ध संसाधनों से ही युद्ध में भाग लेते तथा वीरगति को प्राप्त हो जाते थे।दिल्ली सल्तनत के सुल्तान जलालुद्दीन फिरोज खिलजी को जब कड़ा के अक्तादार मलिक छज्जू ने चुनौती दी और स्वयं को सुल्तान घोषित कर ''कड़े में चत्र धारण कर लिया और अपने नाम का खुत्वा पढ़वाने लगा''[2] और ''मलिक छज्जू ने अपनी उपाधि सुल्तान मुगीसुद्दीन निश्चित की और पूरे हिन्दुस्तान में अपने नाम का खुत्वा पढ़वा दिया। बहुत से प्यादे जमा कर लिये''[3] दोआब के समस्त क्षेत्रीय राजा भी दिल्ली सुल्तान के विरूद्ध मलिक छज्जू के साथ मिल गये। ''मलिक छज्जू के लश्कर में हिन्दुस्तानी रावत और पायक चीटिंयों और टिड्डयों की भाँति एकत्रित हो गये। प्रसिद्ध रावतों एवं पायकों ने मलिक छज्जू के सम्मुख पान का बीड़ा लेकर संकल्प किया था, कि सुल्तान जलालुद्दीन के चत्र पर अधिकार जमा लेगें।''[4] इस प्रकार दोआब (जिसे सुल्तान एवं अन्य मुस्लिम शासक हिन्दूस्तान भी कहते थे) के वर्तमान फर्रूखाबाद, कन्नौज, पटियाली बादायूँ,कोल (अलीगढ़) अमरोहा, बरन (बुलन्दशहर) आदि समस्त क्षेत्रों की क्षेत्रीय जनता दिल्ली सुल्तान के विरोध में संगाठित होने लगी। जलालुद्दीन के शासन में हिन्दू धीरे–धीरे मुस्लिम भय व आतंक के सामने चुनौती पेश करने लगा। दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों से वह अपनी शक्ति को पहचान कर स्वतन्त्र नागरिक के रूप में पुनः उठ खड़ा हुआ था। जलालुद्दीन खिलजी उनकी बेबाकी पर अपने को कोसता था कि ''मेरे लिए, मेरी बादशाही के लिए और मेरे दीन की रक्षा के गुण को लज्जा आनी चाहिए कि हम इस बात की आज्ञा देते हैं कि जुमे के दिन मिम्बरों* में ''हमारे नाम का खुत्बा पढ़ा; जाये ''खुत्बा'' पढ़ने वाले झूठ–मूठ हमें इस्लाम का रक्षक बताये। हमारे राज्य काल में हमारे सामने तथा राजधानी में भगवान तथा मुस्तफा के धर्म के शत्रु बड़े ठाटबाट से धन–धान्य सम्पन्न होकर जीवन व्यतीत करते हैं, भोग विलास में ग्रस्त रहते हैंऔर मुसलमानों के मध्य में अपने ऊपर गर्व किया करते हैं, खुल्लम–खुल्ला मूर्ति पूजा करते हैं, ढ़ोल पीट–पीट कर कुफ्र तथा शिर्क के आदेशों का प्रचार करते हैं। हमारे सिर पर, हमारी बादशाही पर तथा हमारे दीन की रक्षा करने पर थू है''[5] यह कथन अपने आप में दिल्ली सल्तनत की बेबसी व लाचारी को प्रकट करता हैं क्योंकि उनका शासन मूल रूप से **कर** प्राप्त करने

मात्र तक ही सीमित था तथा हिन्दू और हिन्दू क्षेत्रों पर उनका नियंत्रण केवल प्रमुख मार्गों पर था तथा कुछ **कर** एकत्रित करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। जलालुद्दीन अपनी असहाय स्थिति के सम्बन्ध में स्वीकार करता है कि ''खुदा तथा रसूल के शत्रु बड़े ठाठ से धन धान्य सम्पन्न होकर जीवन व्यतीत **कर** रहे हैं किन्तु उनके रक्त की नदी नहीं बहाई जा सकती। **हम कुछ तनके न्योंछावर के रूप में लेकर संतुष्ट हो जाते है**''[6]

उपरोक्त साक्ष्य एवं प्रमाण इतिहासकारों के उस दृष्टिकोण को मिथक साबित करते हैं जिसमें उन्होनें कहा था कि ''इस्लाम की तलवार विश्वमाली की कतरनी थी जिससे उसने आर्यावर्त में स्वयं लगाये हुए ज्ञान वृक्ष की सड़ी हुई शाखाओं और निष्फल अंगों को छांट दिया।''[7] यद्यपि क्षेत्रीय राजाओं के पास संगठित शक्ति का आभाव था उन्होनें दिल्ली सल्तनत को **कर** दिया, उनके समक्ष कई बार आत्मसमर्पण भी किया परन्तु पूर्ण रूप से कभी भी उनके नियंत्रण को न तो स्वीकार किया और न ही उनको चैन की सासं लेने दी। दिल्ली सल्तनत के मलिकों एवं कई बार तो सुल्तान को भी न केवल विद्रोह दबाने के लिये स्वयं सैनिक यात्रा करनी पड़ी बल्कि **कई बार क्षेत्रीय लोगों से समझौता भी करना पड़ा।** सुल्तान अलाउद्दीन ने जब सिकन्दर की भाँति विश्व विजय करने की बात की तो उसके विश्वास पात्र व दिल्ली के कोतवाल अलाउल मुल्क ने सुल्तान को चेताया और कहा कि क्या **''अन्नदाता के अपनी राजधानी में लौटने तथा उन इक्लीमों से वापस होने के उपरान्त वे लोग इस युग में विद्रोह अथवा विरोध न कर देगें''**[8] अलाउलमुल्क ने हिन्दुस्तान (दोआब) के लोगों की विद्रोही प्रकृति का वर्णन करते हुए अलाउद्दीन को आगाह किया कि विश्व विजय पर जाने से पूर्व हिन्दुतान* पर पूर्ण विजय प्राप्त करना आवश्यक हैं। अलाउलमुल्क ने सिकन्दर के राज्य के विपरीत दिल्ली शासन और हिन्दुस्तान के बारे में कहा सिकंदर के युग के विपरीत ''हमारे युग तथा काल के मनुष्य विशेषकर हिन्दू ऐसे हैं कि वे कदापि अपने वचन तथा अपनी बातों का पालन नहीं कर सकते। यदि वे वैभव तथा ऐश्वर्य वाले बादशाह को अपने सिर पर नहीं पाते और सवार, प्यादे, तलवार तथा फर्सा चलाने वालों को अपने प्राणों और धन सम्पत्ति पर नहीं देखते तो किसी भी दशा में उसके आज्ञाकारी नहीं बनते। खिराज नहीं अदा करते। सैकड़ों पाप तथा विद्रोह करते है। अन्नदाता की इक्लीमें हिन्दुस्तान की इक्लीमें है अन्नदाता की अनुपस्थिति विशेषकर वर्षो की अनुपस्थिति में ऐसे मनुष्य जिनके वचन तथा कार्यो पर विश्वास नहीं किया जा सकता और जो किसी प्रकार से राजभक्त नहीं कहे जा सकते, अवश्य विद्रोह कर देगें।''[9]अतः यह अकाट्य सत्य एवं प्रमाणों पर आधारित है कि ''दोआब के हिन्दू शेष भारत के हिन्दुओं की भाँति उत्साह के साथ शीघ्रताशीघ्र अपनी सत्ता की पुनः प्राप्ति और मुस्लिम सत्ता के जुए को उतारने को तत्पर रहते थे''[10] इसलिए अलाउलमुल्क के इस खतरे को बुद्धिमता पूर्ण रूप से महसूस किया, अलाउद्दीन को विश्व विजय के विचारों को आमंत्रित करने से पूर्व भारत को ही विजित करने की सलाह दी''[11]

इस सत्य को स्वयं अलाउद्दीन ने भी स्वीकार किया और कहा कि ''मुझे अनेक सूत्रों से ज्ञात हो चुका है कि खूत* तथा मुकद्दम अच्छे–अच्छे घोड़ो पर सवार होते है उत्तम वस्त्र धारण करते है। खिराज, जजिया, करी और चराई का एक जीतल भी स्वयं नहीं देते। खूती का पारिश्रमिक अलग देहातों से वसूल कर लेते हैं। महफिलें करते है, शराब पीते है और बहुत से तो बुलाने अथवा न बुलाने पर दीवान में कभी उपस्थित नहीं होते। **कर** वसूल करने वालों की चिंता नहीं करते।''[12] अतः इस तरह दोआब के क्षेत्र से **कर** वसूल पाना भी अति दुरूह कार्य था। उसके आदेशों का वास्तविक रूप में पालन न होना उसकी सिकन्दर जैसी विश्व विजय की

कामना में सबसे बड़ी बाधाथी। उसने दिल्ली के कोतवाल अलाउलमुल्क के सुझावों को स्वीकारते हुए विश्व–विजय के अभियान को स्थगित कर दिया। उसने स्वीकार किया कि ''मैं दूसरी इक्लीमों तथा प्रदेशों पर अधिकार जमाने के विषय में सोचा करता हूँ किन्तु मेरी इकलीम के सौ कोस के भीतर भी मेरे आदेशों का यथा रूप पालन नहीं होता। मैं दूसरी इक्लीमों को किस प्रकार अपना आज्ञाकारी बना सकूँगा।''[13] अलाउद्दीन को केवल हिन्दूओं के विद्रोह का ही नही अपितु मुस्लिमों के भी विद्रोहों का लगातार भय रहता था। बाद में अलाउद्दीन ने सम्पूर्ण क्षेत्र को विजित करने को स्थायी एवं विशाल सेना बनायी तथा सेना को रखने में वित्तीय स्थिति न बिगड़े उसके लिए बाजार नियन्त्रण एवं मूल्य नियन्त्रण को अत्यधिक कड़ाई की। अपने शासनकाल के अंत तक उसकी नीति सफल रही परन्तु कठिन परिश्रम एवं अत्यधिक विलासिता के कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया। ''दुर्बल स्वास्थ्य होने के कारण वह पहले से भी अधिक अविश्वासी तथा चिड़चिड़ा हो गया था और उन लोगों की भाँति जो अधिकाँश मानव जाति में अविश्वास करते हैं, वह भी एक धूर्त के जाल में फंस गया था''[14]

स्वयं उसकी स्त्री एवं पुत्रों ने उसकी चिंता नहीं की ''सुल्तान जलंधर नामक रोग में, जोकि बड़ा ही घातक रोग है, ग्रस्त हो गया। उसका रोग दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा। उसके पुत्र भोग विलास में ग्रस्त थे और उसकी पत्नियाँ दावतें तथा समारोह करने में लगी हुई थी''[15] सुल्तान ने सारी शक्ति मलिक नायब (मलिक काफूर) जो दक्षिण में था, को बुलाकर सौंपी क्योंकि वह उसका पुराना विश्वास पात्र था ''दुष्ट मलिक नायब ने यह देखा कि सुल्तान अलाद्दीन अपनी पत्नी तथा खिज्र खाँ से खिन्न है, उसने षड़यन्त्र रचना आरम्भ कर दिया। अलप खाँ को बिना किसी अपराध के सुल्तान की आज्ञा से मरवा डाला। खिज्र खाँ को कैद करवा कर ग्वालियर भेज दिया। खिज्र खाँ की माताको कूशके लाल (लाल राजभवन) में कष्ट पहुँचाने लगा।''[16] इन अत्याचार पूर्ण तरीकों का परिणाम बहुत बुरा हुआ। अलप खाँ के सैनिकों ने गुजरात में विद्रोह कर दिया। चित्तौड़ के राणा ने तुर्की सेना को मार भगाया। दक्षिण में देवगीरि के राजा शंकर देव के उत्तराधिकारी हरपाल देव ने अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया और इस्लामी सेनाओं का वहाँ से खदेड़ दिया ''अलाई राज्य छिन्न–भिन्न होना प्रारम्भ हो गया। इसी बीच में, जबकि उठते हुए उपद्रव बढ़ ही रहे थे, सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु हो गयी। कुछ लोगों का विश्वास है कि मलिक नायब ने, जबकि उसका रोग बहुत बढ़ गया था, उसकी हत्या कर दी''[17]

इस तरह 01 जनवरी 1316 ई0 को अलाउद्दीन की मृत्यु हो गयी। अगले दिन ही मलिक काफूर ने शिहाबुद्दीन उमर, जोकि के 5–6 वर्ष का था, को सुल्तान घोषित करवा दिया तथा स्वयं उसका संरक्षक बन, सत्ता अपने हाथ में ले ली। मलिक काफूर ने अलाउद्दीन के पुत्रों खिज्र खाँ एवं शादी खाँ की आँखों को निकलवा दिया। एक अन्य पुत्र कुतुबुद्दीन (मुबारक खाँ) को कैद में डाल दिया। लेकिन अलाउद्दीन की मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद ही अलाउद्दीन के पायक दासों ने रात्रि में मलिक काफूर के शयन कक्ष में घुसकर उसकी हत्या करने की योजना बना डाली। ''इन पायकों ने यह निश्चय कर लिया कि हम लोग इस दुष्ट ख्वाजा सरा की हत्या कर दें, जिससे हम लोग राज्यभक्त हो जायें। एक रात को जबकि लोग दरबार से वापस हो गये थे और द्वार बंद हो चुके थे, वे पायक नंगी तलवारें लेकर मलिक नायब के कमरे में घुस गये और उस दुष्ट का शीश उसके गंदे शरीर से पृथक कर दिया। उन परामर्श दाताओं को भी जो उसके साथ षड़यंत्र रचते रहते थे,

हत्या कर दी।''[18] और मलिकों तथा अन्य अलाई विश्वासपत्रों की सहायता से कुतुबुद्दीन (मुबारक खाँ) को कैद से निकाल कर सुल्तान शिहाबुद्दीन का नायब घोषित कर दिया गया। कुछ समय पश्चात् कुतुबुद्दीन ने शिहाबुद्दीन को ''ग्वालियर भिजवा दिया। उसकी आँखों में सलाई फिरवा दी (अंधा करवा दिया)''[19] मलिक नायब के हत्यारे पायकों का अभिमान बहुत बढ़ गया और वे खुल्लम खुल्ला दरबार में कहा करते थे कि मलिक नायब की हत्या हम लोगोंनेही की है और सुल्तान कुतुबुद्दीन को हम लोगों ने ही राज सिहांसन पर बिठाया है।''[20] इसलिये सुल्तान कुतुबुद्दीन ने ''अपने प्रथम दरबार के समय ही यह परमावश्यक समझा और इस बात का आदेश दे दिया कि सभी पायकों को दूसरे से पृथक करके कस्बों में भेज दिया जाये और उनके सिर कटवा डाले जायें। उनके उपद्रव से दरबार को मुक्त कर दिया जाये।''[21] इस प्रकार सुल्तान कुतुबुद्दीन ने अपने शासन को दृढ़ करना प्रारम्भ कर दिया। यह प्रमाणतः सत्य ही है कि पायकों का प्रभाव उस समय अत्यधिक बढ़ गया था।

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह ने दानशीलता, दया की नीति अपना कर खुब पैसा लुटाया जिससे अलाउद्दीन खिलजी की कट्टरता से परेशान जनता उसके शासन को उत्तम लोकतांत्रिक एवं जनता के भले का माने। दोआब के लोगों से ''खिराज* कम हो जाने से हिन्दू धन धान्य सम्पन्न तथा मालदार हो गये''[22] अब मौका देखकर ''हिन्दू विरोधी तथा विद्रोही बन गये।''[23]

सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खुसरो खाँ पर अत्यधिक मुग्ध था सुल्तान के उसके साथ गहरे सम्बन्ध थे जिसके कारण खुसरव खाँ अर्थात् खुसरो खाँ सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारक का अत्यन्त विश्वासपात्र बन गया था सुल्तान भोग–विलासी था। खुसरो खाँ ने लगातार उठ रहे विद्रोहों को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी तथा बड़ी मात्रा में धन–सम्पत्ति अर्जित कर ली और विद्रोह कर सुल्तान बनने की योजना बनानी प्रारम्भ कर दी। एक दिन खुसरों खाँ ने योजना के अनुसार उसके शयन कक्ष में उसकी हत्या करवाने को अपने विश्वास पात्र और गुजरात के बरवारों को बुला लिया। ''हजार सुतून के कोठे के कौलाहल से सुल्तान समझ गया कि कोई षड़यंत्र हो गया है। सुल्तान उसी समय जूतियां पहन कर अन्तःपुर की ओर भागा। मफऊल (गुदा भोग्य) खुसरो खाँ ने देखा कि यदि सुल्तान अन्तःपुर की ओर भाग जायेगा तो फिर काम बड़ा कठिन हो जायेगा''[24] वह सुल्तान के पीछे दौड़ा सुल्तान के पास पहुँचकर केश पकड़ कर गिरा लिया। ''सुल्तान ने उसे पटक दिया और उसके सीने पर सवार हो गया। उस जेरखुस्प* व्यभिचारी ने सुल्तान के केशन छोड़े। सुल्तान खुसरो खाँ को जमीन पटके हुए उसके सीने पर सवार था। ''खुसरो खाँ नीचे पड़ा हुआ सुल्तान के केश खींच रहा था इसी अवस्था में जाहरिया बरवार उनके पास पहुँच गया''[25] ''उसने सुल्तान के सीने पर एक तीर मारा और उसके केश पकड़कर खुसरो खाँ के सीने पर से खींच कर भूमि पर फेंक दिया। सुल्तान कुतुबुद्दीन का शीश काट डाला। अनेक व्यक्ति हजार सुतुन के भीतर कोठे पर तथा छत पर बरवारियों के हाथ मारे गये। सुल्तान कुतुबुद्दीन का मृतक शरीर हजार सुतुन के कोठे से हजारसुतुन के आँगन में फेंक दिया।''[26] इस प्रकार खिलजी वंश का विनाश हुआ और खुसरो खाँ दिल्ली का सुल्तान बन बैठा।

खुसरो खाँ के दिल्ली पर बैठने पर मुस्लिमों की तुर्की सत्ता का अंत हो गया। चारों ओर विद्रोह एवं उपद्रव प्रारम्भ हो गये। मलिक फखरूद्दीन जूना खाँ अर्थात् मुहम्मद बिन तुगलक शाह भागकर अपने पिता गाजी मलिक अर्थात् सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक शाह के पास दिपालपुर पहुँच गया। ''गाजी मलिक ने पुत्र के

पहुँचने पर भगवान के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। बहुत कुछ पुण्य किया। खुशी के ढोल बजाये गये''[27] कुछ दिन पश्चात् गाजी मलिक ने सेना लेकर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी।लहरावट के मैदान में दोनों सेनाओं का युद्ध हुआ। खुसरो खाँ पराजित हुआ और उसकी हत्या कर दी गयी। दरबार लगाकर गाजी मलिक ने सभी से कहा कि अलाउद्दीन अथवा जलालुद्दीन का कोई वंशज शेष हो तो उसे सुल्तान घोषित कर दो। सभी ने एक स्वर में गाजी मलिक को सुल्तान मानते हुए कहा कि ''तूने इस्लाम को हिन्दूओं तथा बरवारों के अधिकार से निकाल दिया। भगवान ने अलाई दासों तथ कर्मचारियों में यह सौभाग्य तुझे प्रदान किया और तुझे इस प्रकार सम्मानित किया। हम लोग, वरन् इस राज्य के सभी मुसलमान, तेरे कृतज्ञ हैं।''[28]''हम लोगों को जो कि इस स्थान पर उपस्थित है, तेरे अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति बादशाही तथा उलिल अमरी के योग्य नहीं दिखाई देता। तेरे अतिरिक्त किसी को हम विद्या, बुद्धि, ईमान तथा अधिकार के अनुसार राजसिंहासन के योग्य नहीं पाते। सभी उपस्थित गण उपर्युक्त बात से सहमत थे। अधिकार सम्पन्न लोग भी इस बात से सहमत थे और उन्होनें गाजी मलिक का हाथ पकड़ कर राजसिंहासन पर बैठा दिया''[29]''इस कारण कि गाजी मलिक ने समस्त मुसलमानों की सहायता की थी, उसकी उपाधि सुल्तान गयासुद्दीन हो गई। उसी दिन सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक शाह विशेष तथा साधारण व्यक्तियों की राय से राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। मलिक, बजीर, अमीर, विश्वासपात्र तथा प्रतिष्ठत लोग अपने अपने स्थानों पर सेवा के लिए गयासी राजसिंहासन के सम्मुख खड़े हो गये और उपद्रव शान्त हो गया। इस्लाम में नई जान आ गई और इस्लामी नियम पुनः ताजा हो गये। कुफ्र की बातें भूमि के नीचे पहुँच गई और सभी के हदय शान्त हो गये।''[30]

खिलजी वंश, जो गुलाम वंश के अंतिम सुल्तान कैकुवाद के रक्त से इस्लाम की तलवार को लाल करके स्थापित हुआ, केवल 30 वर्ष की अवधि में ही समाप्त हो गया। जिस प्रकार खिलजी वंश की स्थापना एवं बाद में अलाउद्दीन खिलजी ने क्रूरतापूर्वक शासन किया वह ही उसके अंत के लिए उत्तरदायी बना। उसकी क्रूरता ने विद्रोह की चिंगारी को षड़यत्रों में बदला परिणामस्वरूप पायकों, बरवारियों, जाहरियों का प्रभाव पूरे क्षेत्र में लगातार बढ़ता गया। नये राजवंश ने भी रकत्तरंजित तलवार से राजतिलक कर तुगलक वंश की नींव का आधार तय किया।इस तरह गाजी मलिक ने सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक शाह की उपाधि ग्रहण कर तुगलक वंश की नींव डाली।

संदर्भ :

1. तुगलक डायनेस्टी : डॉ0 मेंहदी हुसैन आगा, पृष्ठ–92
2. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–181
   खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–5
3. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–181
   खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–5
4. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–182
   खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–6
   *मिम्बर मस्जिद/मुस्लिम पजास्थल
5. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–217

खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–27

6. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–217

   खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–27

7. भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास : एस0आर0 शर्मा (प्राक्कथन के सम्मुख का ध्येय वाक्य)

   प्रकाशक–लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–1954

8. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–217

   खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–267

   *हिन्दुस्तान : उस दोआब के क्षेत्र को ही मुल रूपसे हिन्दुस्तान कहते थे।

9. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–258

   खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–57

10. हिन्दू रेसिटेंश डयूरिंग सल्तनत पीरियड (1206–1526), थीसिस : डा0 विशन बहादुर, पृष्ठ–84

11. हिन्दू रेसिटेंश डयूरिंग सल्तनत पीरियड (1206–1526), थीसिस : डा0 विशन बहादुर, पृष्ठ–85

    *खूत–मुकद्दम की भाँति गाँव का मुखिया जिसका कार्य भूमिकर एकत्रित करना होता था

12. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–291

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–70

13. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–291

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–70

14. भारत में मुस्लिम शासन : डॉ0 एस0आर0 शर्मा अनु0 सत्यनारायण दुबे, पृष्ठ–88

15. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–368

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–117

16. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–368

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–117

17. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–369

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–117

18. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–376

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–121

19. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–377

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–122

20. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–377

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–122

21. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–377

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–122

    *खिराज : भूमिकर

22. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–385

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–127

23. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–387

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–128

24. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–407

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–139

    *नीचे लेटने वाला

25. तारीख–ए–फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–408

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–139

26. तारीखे फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–415

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–139

27. तारीखे फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–422

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–148

28. तारीखे फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–423

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–148

29. तारीखे फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–422

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–148

30. तारीखे फीरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृष्ठ–423

    खलजी कालीन भारत (1290–1320) : अनु0 अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ–148